मध्यवर्गीय संवेदनाओं के कथाकार

■ डॉ. गौरी त्रिपाठी

कहानी संभवतः साहित्य की बहुत ही स्वाभाविक और प्राचीन विधा है। हर युग में अपने समय को समेटे हुए कथा रूप में चली
आ रही है। हर विधा के अंदर एक कहानी छुपी होती है जिसको पढ़ने वाला उसके अतिरिक्त भी एक कथानक गढ़ लेता है।
डॉ. नामवर सिंह जी ने इस "कथानक "को बहुत अच्छे से स्पष्ट किया है -"जिसे कथानक कहा जाता है वह दरअसल पाठक के दिमाग
की उपज है। कहानीकार तो कहानी की रचना करता है उसे संक्षिप्त और सरल करके कथा सूत्र निकालने का काम पाठक करता है।"

आज यह कहानी विधा साहित्य के केंद्र में है। समकालीन हिंदी कहानी की विकास यात्रा में साठोत्तरी कहानी आंदोलन एक
महत्वपूर्ण पड़ाव है। रवींद्र कालिया को हम अकहानी आंदोलन के प्रणेता के तौर पर स्वीकार करते हैं, इस दौर के महत्वपूर्ण कहानीकार
हैं रवींद्र कालिया। रवींद्र कालिया ने मानवीय संबंधों पर बेहतरीन कहानियां दी हैं वे कहानी विधा को दुरूहताओं से बाहर निकाल कर
धीरे से कहानियां रचते हैं। इनकी कहानियां जीवन के छोटे-छोटे टुकड़ों की कहानियां है जहां हम सबकी निगाह भी कहीं न कहीं
अटक जाती हैं। काला रजिस्टर, 9 साल छोटी पत्नी, जरा सी रोशनी जैसी बेमिसाल कहानियां उनके हिस्से में दर्ज हैं। कहानी के
साथ-साथ "गालिब छुटी शराब" के माध्यम से संस्मरण विधा को भी बहुत समृद्ध करते हैं। अपने जीवन के उत्तर समय में अच्छे संपादक
के रूप में भी खुद को स्थापित किया। वागर्थ और नया ज्ञानोदय के माध्यम से लेखकों की एक नई पीढ़ी को खड़ा किया।

रवींद्र कालिया की कहानियां अपने समय की चुप्पी को तोड़ती हैं ,सन्नाटे को लगभग नकार देती हैं। कहानियों में एक प्रतिरो
ध स्वर निरंतर अमूर्त रूप से चलता रहता है, जीवन की सहज और छोटी छोटी बातें इनके लिये ज्यादा जरूरी हैं, इसी को कहानी
में लाते हैं। किसी बड़े कथानक की तलाश में वे कतई भटकते नहीं, एक आम आदमी की दिनचर्या को कहानी में ढालना कालिया
जी बहुत अच्छे तरीके से जानते हैं। हालांकि वैचारिकता से विमुखता नई कहानी की प्रमुख प्रवृत्ति भी रही है, कहानी के स्थापित मापदंड
को साठोत्तरी पीढ़ी के कहानीकारों ने नकार दिया, इसीलिए कथा समीक्षकों ने 60 के बाद के दौर को फ्रांस में हुए एंटी स्टोरी मूवमेंट की
तरह "अकहानी" नाम दिया। यह अकहानी ना तो वैचारिक स्तर पर
...त्मक संघर्ष को प्राप्त हुआ ना ही कोई आंदोलन बना। विशेषतया यह शिल्प
...स्तर पर किया गया परिवर्तन था। रवींद्र कालिया और गंगा प्रसाद विमल इस
...नी के प्रमुख प्रणेताओं में से थे। आलोचक मधुरेश की टिप्पणी बहुत प्रासंगिक
...इस संदर्भ में "फ्रांस में अकहानी का आंदोलन एक ओर यदि कथा विधा के
...ल और परंपरागत तत्वों के निषेध पर बल दे रहा था तो दूसरी ओर जीवन
...की प्रकार के नैतिक और मूल्यपरक हस्तक्षेप का भी विरोध कर रहा था।
...प्रयोगशीलता ही उसके लिए सबसे बड़ा रचनात्मक मूल्य थी"।

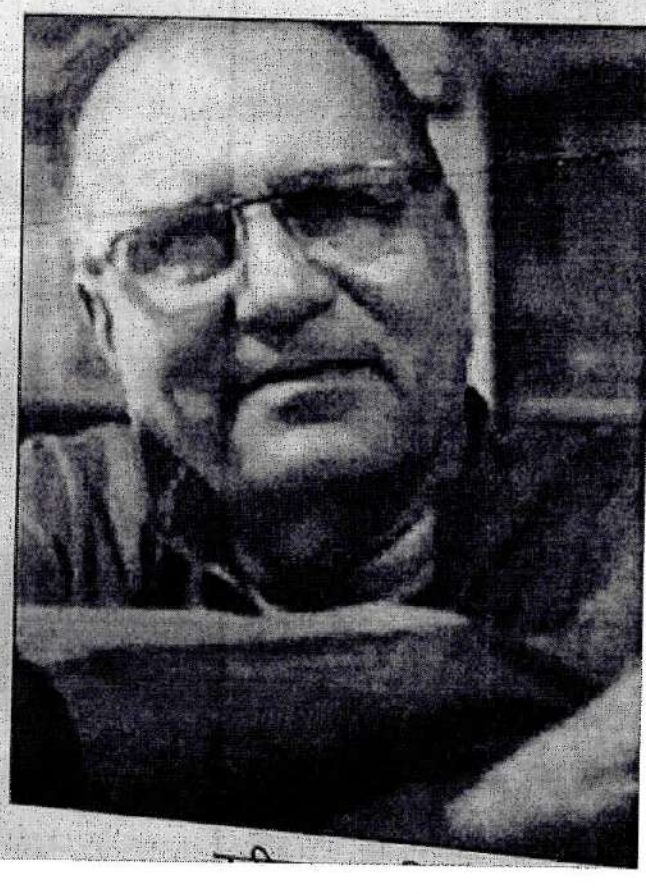

...हमारी अकहानी ने भी प्रयोग तो बहुत किए लेकिन एक रचनात्मक
...के अंतर्गत ही। रवीन्द्र कालिया की शुरू की कहानियों में प्रयोग धर्मिता
...तरह दिखाई पड़ती है जिसके लिए मैं जिसके लिए मैं, 27 साल की उम्र
...कथा, कहानी क ख ग, कोजी कार्नर आदि कहानियों को देखा जा सकता।
...कहानी के प्रणेता के तौर पर उभरने वाले रवींद्र कालिया अपनी कहानियों
...में कथा शिल्प को तोड़ते हैं। देश में 60 के बाद का समय राजनैतिक
...सामाजिक हलचलों का भी समय है, पूरे विश्व के साथ साथ भारत में भी
...जीवन मूल्यों के प्रति एक गहरा नकार हर जगह दिखाई पड़ने लगा
...मूल्यों के प्रति प्रतिकार के साथ साथ गहरा असंतोष व्याप्त था, देश
...सही रास्ता नहीं दिखा पा रही थी युवा पीढ़ी को। बेरोजगारी, निराशा...